I J R S S I S, Issue (IX), Vol. (I), May 2023: 261-264
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No. : MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES

© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

"आचार्य राममूर्ति के शैक्षिक विचारों का अध्ययन"

बिपिन विहारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विभाग)
रजत कॉलेज लखनऊ (उ०प्र०)

Communicated : 02.02.2023 | Revision : 08.03.2023 Accepted : 07.04.2023 | Published: 30.05.2023

सारांश :
आचार्य राममूर्ति मूलतः एक शिक्षक थे। उनका सपना जननायक बनने का नहीं था, बल्कि वह चाहते थे कि समाज परिवर्तन के काम में लगने वाले ज्यादा से ज्यादा सिपाही तैयार हों। उन्होंने अपना सारा जीवन ऐसे लोगों को तैयार करने में लगा दिया। जहाँ भी ऐसे लोगों के मिलने की संभावना होती, आचार्य जी वहाँ पहुँचने की कोशिश करते। उनके कुछ मतभेद तो अपने सर्वोदय आंदोलन के साथियों से भी थे। जब जयप्रकाश नारायण ने बिहार में छात्र आंदोलन को अपना समर्थन दिया तथा बाद में संपूर्ण क्रांति का आंदोलन शुरू किया तो आचार्य जी ने सबसे पहले उसका केवल समर्थन ही नहीं किया, बल्कि पहले सिपाही की तरह उसमें कूद पड़े। उन्होंने संपूर्ण क्रांति के भाष्य का जिम्मा खुद संभाल लिया।आचार्य राममूर्ति भारतवासियों को शुद्ध भारतीय संस्कृति का अनुगामी बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करने के साथ-साथ समाज की आवश्यकताओं एवं समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करे, जिससे देश विकसित हो और आत्म निर्भर बने।एक कुशल शिक्षाविद् एवं कुशल प्रशासक के रूप में आचार्य राममूर्ति ने जिस नवाचारी रूप में शिक्षा का स्वरूप विकसित किया, वह वास्तव में उनके गहन चिन्तन-मनन का विषय है।

प्रमुख शब्द- आचार्य राममूर्ति, शैक्षिक विचार

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव जीवन के सन्तुलित निर्माण में नितान्त सहायक है। शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन उसी प्रकार अंधकारपूर्ण है। जैसे. विशाल भवन में प्रकाश का अभाव हो मनुष्य के सर्वांगीण उत्थान में शिक्षा के माध्यम से अनेक गुणात्मक परिवर्तन सम्भावित है। वस्तुत शिक्षा वह प्रकाश स्तम्भ है जिसके आश्रय से गहरे अंधकार को चीरता हुआ मनुष्य सुन्दर प्रकाश की ओर अग्रसर हो पाता हैए मानव विकास के विविध आयामों में उसके शरीर, बुद्धि, मन और आत्मा का संस्कार अपेक्षित होता है जो कि शिक्षा के द्वारा ही सम्पन्न होता है। संसार के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेद में इसी तथ्य को ''तमसो मा ज्योतिर्गमय मत्युमा अमृतम गमयश् असतो मा सदगमय'' इत्यादि माध्यमों से दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्त किया गया। संस्कार के बिना कोई भी व्यक्ति या पदार्थ किसी भी कार्य के लिए उपयुक्त नही होता। कच्चे घड़े में जल का संधारण सम्भव नहीं है। इसी प्रकार भली प्रकार खेतों की जुताई और सफाई न होने पर उसमें कृषि कार्य सम्भव नहीं है। शिक्षा के प्रसार में और शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वन में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षक ही वास्तव में वह योजक कड़ी है जिसका राष्ट्र निर्माण में बहुत बड़ा योगदान होता है। क्योंकि शिक्षक ही विद्यार्थी वर्ग का चरित्र निर्माण करता है और आज का विद्यार्थी ही कल का भावी नागरिक या राष्ट्र निर्माता है डॉक्टर कलाम अपनी पुस्तक अदम्य साहस में लिखते हैं कि ''शिक्षकों का महान ध्येय युवा मस्तिष्कों को तेजस्वी बनाना है तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में सबसे सशक्त साधन है''।

शैक्षिक प्रणाली तत्कालीक शैक्षिक आवश्यकताओं एवं उपलब्धताओं को ध्यान में रखकर निर्मित की जाती है तथा शिक्षा के प्रशासक एवं शिक्षक मिलकर इस शैक्षिक प्रणाली को आगे बढ़ाते है। शिक्षक समसामयिक समाज एवं राष्ट्र की चिंतनधारा को बदलने की ताकत रखता है और इसके लिये प्राय: उसकी शुरूआत होती है बच्चों की शिक्षा से। प्राय: देखा गया है कि शिक्षा का अर्थ चहारदीवारी में बच्चों को कैद करके सिर्फ किताबे पढ़ाने तक ही सीमित नही रहता वरन् शिक्षा उनके लिए विकास का पर्याय होती है और शिक्षक बच्चों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास के लिये आयु वर्गानुसार ऐसी रोचक स्थितियों संजोते है कि जिनसे बच्चों के सहज विकास की गति निरन्तर बनी रहे और बच्चे शाला में रहते हुए भी घर जैसा खुला, आत्मीय, तनावमुक्त, आनन्ददायी और क्रियात्मक माहौल महसूस करें।

अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। इसमें आचार्य राममूर्ति की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता प्रमुख रूप से किया गया है। इसलिए शोध संबंधी तथ्यों के संकलन के लिए आचार्य राममूर्ति से संबंधित साहित्य का अध्ययन केन्द्रों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त साक्ष्यों का अवलोकन किया गया है। इस शोध कार्य मे सामग्री दो स्रोतों (साधनों) से प्राप्त की गयी है–

१. प्राथमिक स्रोत (साधन) –भाषण से सम्बंधित साहित्यक ग्रंथों से सामग्री एकत्रित की गयी है।
२. द्वितीयक स्रोत (साधन) –प्रस्तुत स्रोत सम्बंधित विचारों, सूचनाओं एवं संदर्भ पुस्तकों को द्वितीय स्रोत के रूप में संकलित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :–

सिंह मनोज कुमार (२०१०) : ने अपने शोध अध्ययन विषय ''प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि –

- गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति द्वारा स्वीकृत प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य न केवल समीचीन है बल्कि सार्वदेशिक एवं सर्वकालिक है।
- गिज्जुभाई एवं आचार्य राममूर्ति धर्म या जाति के आधार पर बच्चों में विभेद नहीं करते, वे सच्चा धर्म मानव धर्म मानते थे।

- **Prakash Bhausaheb Salavi (Nov.– Dec. 2013)** J. Krishnamurti on Educaiton : Philosophical Perspective" "Scholarly Research Journal For Interdisciplinary studies", Vol- 2/9, Pg.842-850.
- **Vargeesh C. (Dec-2015)** "Faith and understanding the access to spiritual truth: a comparative study on S Kierkegaard and J Krishnamurti "Journal of reviews International Educational Research",Vol-2, issue-9, Pg.51-52.

आचार्य राममूर्ति के शैक्षिक विचार :

आचार्य राममूर्ति ने यह माना कि वास्तविक शिक्षक बच्चों के बचपन को शेष जीवन विच्छिन, सीमित और एकांतिक भाग मानने की भूल नही करते वरन मानव जीवन की अखण्डता और सम्पूर्णता के परिप्रेक्ष्य में उसे देखते हैं। वे यह मानकर चलते है कि मनुष्य एक विकासशील प्राणी है और प्रत्येक जीवन्त प्राणी की भांति मनुष्य भी अपने स्वरूप को पूर्णता तक पहुॅचाने के लिये स्वत: विकास करता चलता है। इसलिए बाल शिक्षण में स्वतंत्रता, स्व–क्रिया, स्वानुभव और बाल–मन को समझने पर सर्वाधिक बल दिया जाता है। देश की स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले तक तो अलग–अलग प्रदेशों और भाषायी अंचलों में बाल शिक्षण के लिये समर्पित, साहसी एवं प्रयोगनिष्ठ ऐसे सच्चे शिक्षक सहज ही मिल जाते थे,

क्योंकि तेजस्वी पीढ़ियों के निर्माण और अपने समाज को प्रभावित करने में उनकी बहुत गहरी भूमिका रही।

आचार्य राममूर्ति ने कहा– देश की शैक्षिक प्रगति के लिए किये गये प्रयास पर्याप्त नहीं है विगत वर्षो में शिक्षा की स्थिति और बिगड़ी है। असन्तोष, सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण, सामाजिक विघटन और युवकों में विद्रोह की भावना भड़की है, हिंसा अब शैक्षिक संस्थाओं तक पहुँच चुकी है अनेक प्रयास इस समस्या को रोकने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। देश में उत्पन्न यह स्थिति उसके अस्तित्व के लिए खतरा बन चुकी है। धार्मिक एवं शैक्षिक संकट भी इसमें शामिल है।अत: यह विचारणीय प्रश्न है कि शिक्षा वह भूमिका क्यों नहीं निभा सकी।

आचार्य राममूर्ति के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं का विकास करके उसमें पूर्णता लाती है तथा एक स्वस्थ्य, प्रबुद्ध एवं कार्यशील समाज का निर्माण करती है। शिक्षा समाज में समानता, बन्धुत्व एवं समायोजनशीतला का गुण विकसित करती है जिससे व्यक्ति की वैयक्तिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। आचार्य राममूर्ति का मानना है कि व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को विकसित करना ही शिक्षा है और शिक्षा ही वह साधन है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सकता है तथा उसमें प्रेम एवं विश्वबन्धुत्व के गुण विकसित हो सकता है।

आचार्य राममूर्ति के शिक्षा सम्बन्धी विचार एवं उद्देश्य उनके निजी अनुभवों पर आधारित है। बंधनयुक्त एवं तनावग्रस्त जीवन की अपेक्षा वे बालकों को स्वछन्द वातावरण में उनकी रूचि एवं क्षमता के अनुसार शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे। वे बालकों को ऐसी शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे जिससे बालकों का सर्वांगीण विकास हो सके और भावी जीवन पक्षों पर समान रूप से ध्यान देने पर बल दिया।

आचार्य राममूर्ति ने शिक्षा को शारीरिक विकास का महत्वपूर्ण पहलू माना। इसीलिए उन्होंने शिक्षा में बालक की शारीरिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिये जाने पर बल दिया। उनका मन्तव्य था कि बालकों का शारीरिक विकास उन्हें स्वस्थ्य वातावरण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, खेलने–कूदने, उठने–बैठने आदि का अवसर प्रदान करके तथा उनके विभिन्न अंगो एवं इन्द्रियों को प्रशिक्षित करके किया जा सकता है।

आचार्य राममूर्ति ने शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक एवं बौद्धिक विकास पर बल दिया। बौद्धिक विकास के लिए पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ प्रयोगात्मक एवं व्यवहारिक ज्ञान को आचार्य राममूर्ति ने आवश्यक एवं उपयोगी बताया। आचार्य राममूर्ति के अनुसार मानसिक विकास के लिए व्यक्ति के मस्तिष्क उसके संवेगों कल्पनाओं एवं चिन्तन को प्रौढ़ किये जाने की आवश्यकता है तथा बौद्धिक विकास हेतु कुछ विषयों का ही ज्ञान न कराकर बालक की मानसिक शक्तियों के उन्नयन तथा किसी भी समस्या पर स्वतंत्र चिन्तन की क्षमता में वृद्धि करने से है।

आचार्य राममूर्ति ने बालक के संवेगात्मक गुणों के विकास पर भी विशेष बल दिया। उनका मानना है कि इन्द्रियों के सम्पूर्ण प्रशिक्षण के लिए बालक के संवेगों को समझना अत्यन्त आवश्यक है। वे बालक के शरीर, मन एवं संवेगों को सम्पूर्ण रूप से विकसित करना शिक्षा का उद्देश्य मानते है। उनके अनुसार अध्ययन विषयों में चिन्तनपरक विषयों के साथ–साथ काव्य, चित्रकला, संगीत आदि की शिक्षा दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसके माध्यम से बालक में सौन्दर्य प्रेम, सहानुभूति, करूणा, वात्सत्य, स्नेह, दया आदि भावनाओं का समुचित विकास हो सकता है।

आचार्य राममूर्ति मानवतावादी शिक्षा के समर्थक एवं पोषक है। उन्होंने शिक्षा को मानवता का पर्याय माना तथा बालकों में मानवीय गुणों, नैतिक आदर्शो एवं अध्यात्मिक मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया। आचार्य राममूर्ति ने नैतिक एवं अध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का अनिवार्य अंग बनाये जाने पर बल दिया।

आचार्य राममूर्ति का विचार है कि बालक का विकास उसकी रूचि, अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति के अनुरूप होना चाहिए और यह गुण समाज से परे सम्भव नही। उनके विचार से मनुष्य एवं सहयोग की भावना से प्रेरित हो करके सामाजिक संगठनों का निर्माण करते है और ये सामाजिक संगठन बालक में सामाजिक गुणों का भाव विकसित करते है।

आचार्य राममूर्ति ने सामंजस्य की क्षमता के विकास को शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य माना वे बालकों को वास्तविक परिस्थितियों विभिन्न सामाजिक स्थितियों तथा पर्यावरण की जानकारी प्रदान करने के पक्षधर है। आचार्य राममूर्ति बालको में अपने परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता का विकास करना महत्वपूर्ण मानते थे। आचार्य राममूर्ति ने बालक में सामाजिक गुणों, शैक्षिक परिस्थितियों, शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं, नैतिक एवं आत्यात्मिक गुणों तथा सामाजिक समानता स्थापित करने हेतु सामंजस्य का गुण विकसित करने को शिक्षा का प्रमुख उत्तरदायित्व माना।

उपसंहार :

आचार्य राममूर्ति शैक्षिक आवश्यकता एवं सर्वसुलभता को लेकर अत्यन्त स्पष्ट और पारदर्शी थे। उन्होंने ऐसा कोई सिद्धान्त शास्त्र नहीं रचा जो सिद्धान्तों की जटिलता में उलझ कर रह जाय और न ही उन्होंने सरल से कठिन, ज्ञान से व्यवहार या अभ्यास जैसे कोई सूत्र वाक्य रचा। भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, कहानी, निबन्ध, पत्र और व्याकरण को सीखने और सिखाने हेतु उन्होंने जो सुझाव दिये वे न केवल वास्तविकता एवं तथ्यात्मकता पर आधारित थे बल्कि वे बालकों की सृजनात्मकता एवं जिज्ञासा को भी बढ़ाने वाले थे। उन्होने समाज के प्रत्येक वर्गो के लिए समान शैक्षिक अवसर एवं शैक्षिक विषयों के चयन हेतु स्वतंत्रता का पुरजोर समर्थन किया। आचार्य राममूर्ति ने अपने जीवन अनुभवों से यह निष्कर्ष व्यक्त किया कि यदि विद्यालय को संगमरमर के आलीशान महल में बना दिया जाय तो जरूरी नही की वह ऊँची शिक्षा का सूचक हो और खण्डहर में विद्यालय बना दिया जाय तो जरूरी नही कि वह दुनिया भर के श्रेष्ठ विद्यालयों से बेहतर शिक्षा का केन्द्र नही है।

संदर्भ सूची :

आचार्य राममूर्ति : जे०पी० की बिरासत,प्रकाशक सर्वसेवा संघ राजघाट,नईदिल्ली २००३, पृ० सं० ०२.

आचार्य राममूर्ति : अगला कदम, प्रकाशक सर्वसेवा संघ राजघाट,नई दिल्ली पृसं० ३६

प्रो० रमन बिहारी लाल : भारतीय शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि,रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ, पृ० सं० १२.